

අල්ලාහ්ගේ ගැනවන ඔහු ව විශ්වාස නොකළ විටෙක ඔවුන්ට ඔහු දඬුවම් කරනුයේ ඇයි?

හමේ ඈඕාන ආව් සාඒ සංසාරී කේ රඔ කේ ඒති සමර්ආන කේ ඔීඔ අන්ර කරනා හෛගා ।

සාඒ සංසාරී කේ රඔ කා ආවශ්‍යක අඬිකාර, ඔසේ ඔෂෛඬනා කසී කේ ලිආ ඊඔිත නඕී හේ, ඔහ හේ කි ඊසකේ ආක හෛනේ කෛ ස්වීකාර කිඔා ඔාආ, ඊසී කී ඩඔාඔත කී ඔාආ, ඊසකේ සාඔ කසී කෛ සාඬී න ඔහරාඔා ඔාආ । වහී ආක සූඕ්ටිකර්තා හේ, ඊසී කී ඔාඔශාහ්ත හේ, ඊසී කා ආඔේශ ඔලතා හේ, ඔාහේ හම ඕානේ ඔා ඩකාර කර ඔේ । ඔහී ඈඕාන කා ඕූල හේ (ඈඕාන ස්වීකාර කරනේ ආව් කාම කරනේ කා නාම හේ) । ඈසකේ අතිරික්ත හමාරේ ඒාස ඔූසරා විකල්ඒ නඕී හේ । ඈසී කී රෛශනී ඕේ ඩසාන කා හිසාඔ හෛගා ආව් ඊසේ සඔා ඔී ඔාආඕී ।

සමර්ආන කා ඊලඔා අඒරාඔ හේ ।

"ක්‍යා හම ආඔාකාරිඔී කෛ ඒාඒිඔී කේ සමාන කර ඔේඕේ ?" [318] [සූරා අල-කල්ම : 35]

කසී කෛ සාඒ සංසාරී කේ රඔ කේ ඔරාඔර ඔා සාඬී ඔහරානේ කෛ අඔ්‍යාඔාර කහ්තේ හේ ।

"ඔානතේ හූආ ඔුම අල්ලාහ් තආලා කේ සාඬී න ඔනාආෛ ।" [319] [සූරා අල-ඔකරා : 22]

"ඔෛ ලෛග ඈඕාන රඔව්තේ හේ ආෛර අඒනේ ඈඕාන කෛ ෂිර්ක් සේ නඕී ඕිලාතේ හේ, ආසේ හී ලෛගෛ කේ ලිආ ෂානිති හේ ආෛර වහී සීඔේ රාස්තේ ඒර ඔල රහේ හේ ।" [320] [සූරා අල-අනආම : 82]

ඈඕාන ආක අනඔේඔා ඕුඔා හේ, ඔසකේ ලිආ අල්ලාහ්, ඊසකේ ඒරිෂ්තෛ, ඊසකී ඒුස්තකෛ, ඊසකේ රසූලෛ ආෛර අන්තිම ඔින ඒර විෂ්වාස රඔව්නා ආවශ්‍යක හේ । සාඔ හී අල්ලාහ් කේ නිඒ්ණඔී කෛ ස්වීකාර කරනා ආෛර ඊසේ සන්ඔු෕ හෛනා ඔරූරී හේ ।

"(කුඔ෕) ඔඔුආෛ නේ කහා : හම ඈඕාන ලේ ආආ । ආඒ කහ් ඔේ : ඔුම ඈඕාන නඕී ලාආ । ඒර්ඔු ඔහ කහෛ කි හම ඈස්ලාම ලාආ (ආඔාකාරී හෛ ඕාආ) । ආෛර අඕී තක ඈඕාන ඔුඕ්හාරේ ඔිලෛ ඕේ ඒරවේෂ නඕී කිඔා । ආෛර ඔඔි ඔුම අල්ලාහ් ආෛර ඊසකේ රසූල කී ආඔා කා ඒාලන කරෛඕේ, ඔෛ වහ ඔුඕ්ඕේ ඔුඕ්හාරේ කර්ඕී ඕේ සේ කුඔ෕ ඕී කඕී නඕී කරෛඕා । නි:සඔේහ අල්ලාහ් අති කෂඕාෂීල, අඔ්‍යන්ත ඔ්‍යාඔාන් හේ ।" [321] [සූරා අල-හූඔුරාත : 14]

ඊඒර්‍යුක්ත ආඔත හමේ ඔතාඔී හේ කි ඈඕාන ආක ඊඔු ආෛර ඕහාන ඔර්ඔා හේ । ඈඕාන නාම හේ රාඔී හෛනේ, ස්වීකාර කරනේ ආෛර ඔුෂ හෛනේ කා । ඈඕාන කී කඔී ෂ්‍රේඕිඔාආ ආව් ඔර්ඔේ හේ ආෛර ඈඕාන ඕඔතා-ඔඔතා රහ්තා හේ । ඕෛඔ කේ ඕාමලෛ කෛ සමඩනේ කී කෂඕතා ආෛර ඔිල කා ඊඕ්ඕේ ස්වීකාර කරනා ආක ව්‍යකිති කා ඔූසරේ ව්‍යකිති සේ ඕිනින හෛතා හේ । ඊසී ඒරකාර ඈඕාන අඒනේ රඔ කේ ඔමාල ව ඔලාල කේ ඕුඕෛ කෛ සමඩනේ ආව් රඔ කෛ ඔානනේ ඕේ අලඕ-අලඕ හෛතේ හේ ।

ग़ैब के मामलों को कम समझने या सोच के संकीर्ण होने पर इंसान की पकड़ नहीं होगी, परन्तु सदैव जहन्नम में रहने से बचने के लिए कम से कम जो चीज़ उसके लिए आवश्यक है उसपर उसकी पकड़ होगी। यह आवश्यक है कि अल्लाह को एक माना जाए और यह माना जाए कि सारी सृष्टि उसी की है, सारे संसार में उसी का आदेश चलता है एवं उसी की इबादत होनी चाहिए। इसे स्वीकार कर लेने के बाद अल्लाह जिसके चाहे अन्य गुनाहों को माफ़ कर दे। इसके अलावा इंसान के पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है। या तो ईमान और सफलता या फिर कुफ़्र और बर्बादी। या तो कुछ है या फिर कुछ नहीं है।

"निःसंदेह अल्लाह यह क्षमा नहीं करेगा कि उसका साझी बनाया जाए और उसके सिवा जिसे चाहे, क्षमा कर देगा। जो अल्लाह का साझी बनाता है, तो उसने महा पाप गढ़ लिया।" [322]

ईमान ग़ैब से जुड़ा हुआ विषय है और ग़ैब के ज़ाहिर होने या क़यामत की निशानियाँ दिख जाने के बाद ईमान लाने का कोई फ़ायदा नहीं रह जाएगा। [सूरा अल-निसा : 48]

"जिस दिन तुम्हारे पालनहार की तरफ से कोई निशानी आ जाएगी, तो उस दिन उसका ईमान लाना उसको कोई काम न देगा, जो पहले से ईमान न लाया हो, या ईमान की स्थिति में कोई सत्कर्म न किया हो।" [323] [सूरा अल-अन्आम : 158]

यदि कोई व्यक्ति ईमान रखते हुए नेक कामों से लाभान्वित होना चाहता है और अपनी नेकियों को बढ़ाना चाहता है, तो यह क़यामत आने और परोक्ष के प्रकट होने से पहले होना चाहिए।

जहाँ तक उस व्यक्ति की बात है, जिसके खाते में नेक काम नहीं हैं, अगर वह हमेशा के जहन्नम से बचना चाहता है, तो उसके लिए अनिवार्य है कि वह दुनिया से इस अवस्था में निकले कि अल्लाह के सामने समर्पित हो, अल्लाह के एक होने पर विश्वास रखता हो और उसकी इबादत करता हो। कुछ पापियों को अस्थायी रूप से जहन्नम में जाना पड़ सकता है, परन्तु यह अल्लाह की चाहत के तहत है। यदि वह चाहेगा तो क्षमा कर देगा और यदि चाहेगा तो जहन्नम में डाल देगा।

"हे ईमान वालो! अल्लाह से ऐसे डरो, जैसे वास्तव में उससे डरना होता है, तथा तुम्हारी मौत इस्लाम पर रहते हुए ही आनी चाहिए।" [324] [सूरा आल-ए-इमरान : 102]

इस्लाम में ईमान का मतलब ज़बान से इक़रार करना और उसके तक्राज़े पर अमल करना है। ईमान का मतलब केवल विश्वास नहीं है, जैसा कि आज ईसाई धर्म की शिक्षाओं में है और न केवल अमल है, जैसा कि नास्तिकता में है। वह व्यक्ति जो ग़ैब पर ईमान एवं धैर्य के स्टेज में है, उसका ईमान उस व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकता है, जिसने आख़िरत में ग़ैब को देख लिया हो और उसके आगे परोक्ष प्रकट हो चुका हो। इसी तरह वह व्यक्ति जिसने मुसीबत, सख्ती, कमज़ोरी एवं इस्लाम के अंजाम से अज्ञानता की अवस्था में अल्लाह के लिए काम किया है, उस व्यक्ति के बराबर नहीं हो सकता है जिसने अल्लाह के लिए उस समय काम किया हो, जब इस्लाम विजयी और शक्तिशाली हो चुका हो।

“तुम में से जिन लोगों ने विजय से पूर्व अल्लाह के मार्ग में खर्च किया तथा धर्मयुद्ध किया, वह (दूसरों के) समतुल्य नहीं, अपितु उनसे अत्यंत उच्च पद के हैं, जिन्होंने विजय के पश्चात दान किया तथा धर्मयुद्ध किया। हाँ, भलाई का वचन तो अल्लाह तआला का उन सब से है, और अल्लाह उन सब की अच्छी तरह खबर रखता है जो तुम करते हो।” [325] [सूरा अल-हदीद : 10]

अल्लाह बिना कारण किसी को दंडित नहीं करता। इंसान का हिसाब लिया जाएगा और उसे या तो बन्दों के अधिकार बर्बाद करने के कारण या फिर सारे संसारों के रब के अधिकार को नष्ट करने के कारण दंडित किया जाएगा।

वह अधिकार जिसे, सदैव के जहन्नम से नजात पाने के लिए, किसी को छोड़ने की अनुमति नहीं है, वह अधिकार है सारे संसारों के रब के एक होने, उसी की इबादत एवं उसका कोई साझी न होने को स्वीकार करना, इन शब्दों के द्वारा कि "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है और उसका कोई साझी नहीं है, मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके बंदे एवं उसके रसूल हैं, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सभी रसूल सत्य हैं और मैं गवाही देता हूँ कि जन्नत सत्य है और जहन्नम सत्य है" फिर इन शब्दों के अधिकार को पूरा करना।

इस्लाम को स्वीकार करने से किसी को न रोकना या किसी ऐसे काम का समर्थन न करना जिसका उद्देश्य इस्लामी आह्वान एवं अल्लाह के धर्म को फैलने से रोकना हो।

लोगों के अधिकारों का अतिक्रमण न करना, उनको नष्ट न करना या उनपर अत्याचार न करना।

सृष्टि या सृष्टियों से बुराई को रोकना। इसके लिए लोगों से अपने आपको दूर करना पड़े तो भी कर लेना।

कभी-कभी इंसान के पास बहुत सारे नेक काम नहीं होते हैं, परन्तु वह किसी को हानि नहीं पहुँचाता है या कोई ऐसा काम नहीं करता है जो उसके अपने आपके लिए या लोगों के लिए बुरा हो, अल्लाह के एक होने की गवाही देता है, तो उसके जहन्नम से नजात पाने की उम्मीद है।

"अल्लाह को क्या पड़ी है कि तुम्हें यातना दे, यदि तुम कृतज्ञ रहो तथा ईमान रखो और अल्लाह बड़ा गुणग्राही अति ज्ञानी है।" [326] [सूरा अल-निसा : 147]

मनुष्यों को रैंक और दर्जा के अनुसार वर्गीकृत किया जाएगा। इस दुनिया दुनिया में उनके कर्मों से शुरू होकर, क़यामत होने तक, अनदेखी दुनिया के प्रकट होने एवं आखिरत में हिसाब शुरू होने तक। क्योंकि कुछ समुदायों को अल्लाह आखिरत में आजमाएगा, जैसा कि हदीस शरीफ में आया है।

संसारों का रब प्रत्येक व्यक्ति को उसके बुरे कर्मों के अनुसार दंड देता है। दंड या तो दुनिया में ही देता है या आखिरत तक उसको टाल देता है। यह काम की गंभीरता, तौबा करने या न करने और अन्य सृष्टियों पर पड़ने वाले उसके प्रभाव अथवा उससे होने वाले नुकसान पर निर्भर करता है। दरअसल अल्लाह बिगाड़ को पसंद नहीं करता।

